इकाई 12 भारत में बालिकाओं का वृत्ति विकास

संरचना

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 युवतियों का वृत्तिक विकास

12.4 प्रमुख विशिष्टताएं

12.4.1 महिलाओं की गृहिणी के रूप में भूमिका

12.4.2 महिलाओं की कार्य भूमिका का अवबोधन

12.4.3 महिलाओं की कामकाज़ में भागीदारी

12.4.4 महिलाओं के काम में भागीदारी को प्रभावित करने वाले कारक

12.4.5 महिलाओं की शैक्षिक भागीदारी

12.4.6 मूल्य तथा अभिप्रेरणा

12.4.7 बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यावसायिक आकांक्षाएँ

12.4.8 सांस्कृतिक तथा वातावरण संबंधी कारक

12.4.9 वृत्ति-उन्मुख बनाम गैर-वृत्ति-उन्मुख महिलाएं

12.5 महिलाओं के वृत्ति प्रतिरूप

12.6 बालिकाओं की वृत्ति संबंधी कठिनाइयाँ

12.6.1 लिंग आधारित भेदभाव

12.6.2 तुच्छ आत्म-छवि व आत्म-सम्मान

12.6.3 बालिकाओं की शिक्षा क्षेत्र तक पहुँच

12.6.4 दोहरी भूमिका

12.6.5 भूमिका द्वंद्व

12.6.6 सफलता का भय

12.6.7 व्यवसाय के चयन के समय बाधाएँ

12.7 अध्यापकों की भूमिका

12.7.1 बालिकाओं की शिक्षा के उपागम

12.7.2 सीखने का अनुकूल वातावरण

12.7.3 वृत्ति संबंधी सूचनाएँ और साहित्य उपलब्ध कराना

12.7.4 भूमिका प्रतिरूप प्रस्तुत करना

12.7.5 व्यक्तिगत सहायता उपलब्ध कराना

12.8 अभिभावकों की भूमिका

12.9 सारांश

12.10 अभ्यास कार्य

12.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.1 प्रस्तावना

महिलाओं को समस्त क्षेत्रों में समान अधिकार दिलाना तथा राष्ट्र के लक्ष्यों की प्राप्ति में इस क्षेत्र के मानव संसाधनों का उपयोग करने के लिए आजकल महिलाओं की जीवन-वृत्ति का क्षेत्र बहुत

महत्वपूर्ण रूप में उभर कर आया है। मानव क्षमताओं के रूप में महिला संसाधन हमारे देश में अभी अर्ध-विकसित है। इस क्षेत्र का महत्व 1975 में बढ़ा है जब इस वर्ष को अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में मनाया गया तथा महिलाओं की इस क्षमता के विकास को शिक्षा के माध्यम से विकसित करने में अभूतपूर्व रुचि दर्शाई गई।

इसके बाद इस संबंध में तीन आन्दोलन और जुड़ गए:

1. संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 1975-1985 को महिला दशक के रूप में मनाया जाना।
2. 1990 में सार्क देशों (SAARC) द्वारा 1991-2000 के दशक को बालिका वर्ष के रूप में स्वीकार करना।
3. 1988-2000 में महिलाओं के लिए भावी राष्ट्रीय योजना रिपोर्ट (National Perspective Plan for Women) भारत सरकार को प्रस्तुत करना।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जाएँगे कि:

- महिलाओं के वृत्ति विकास को भली प्रकार अभिव्यक्त कर सकेंगे;
- बालिकाओं के वृत्ति विकास संबंधी मुख्य बातों को सूचीबद्ध कर सकेंगे;
- महिलाओं से संबंधित मुख्य वृत्ति प्रतिरूपों को पहचान सकेंगे;
- महिलाओं की वृत्ति चयन संबंधी कठिनाइयों की व्याख्या कर सकेंगे; तथा
- अभिभावक तथा अध्यापक के रूप में आप बालिकाओं के वृत्ति विकास में अपनी भूमिका पहचान पाएँगे।

12.3 युवतियों का वृत्तिक विकास

वृत्ति विकास व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का ही अंग है। वृत्ति विकास का सर्वदा, महिलाओं का उपेक्षित करके, केवल पुरुष के संदर्भ में ही अध्ययन किया जाता है। विकसित देशों तक में भी महिलाओं की उपेक्षा की जाती है जहाँ महिलाओं की मज़दूरी की भूमिका को स्वीकारा जाता है। इसका एक कारण महिलाओं के वृत्ति विकास के अध्ययन को कठिन मानना है। परम्परागत वृत्ति विकास सिद्धान्तवादियों ने महिलाओं के वृत्ति विकास संबंधी महत्वपूर्ण बातों में परम्परागत संस्कृति में विवाह, परिवार, पति का पत्नी के कार्य के प्रति दृष्टिकोण आदि - पर परम्परागत संस्कृति के कारण कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। व्यवसाय या वृत्ति संबंधी जो भी अध्ययन हुए हैं, उनका मुख्य लक्ष्य भी पुरुषों की ओर रहा है तथा महिलाएँ उपेक्षित ही रही हैं अथवा इनके विषय में यह मान लिया गया है कि महिलाएँ पुरुषों के व्यवहार में ढाली जा सकती हैं। अब महिलाएँ भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं उनकी भी उच्च वृत्ति की आकांक्षाएँ हैं। इसी कारण इस क्षेत्र में इन बिन्दुओं को ध्यान में रखकर शोध कार्यों की आवश्यकता है कि वे वास्तव में क्या हैं, वे व्यक्ति के रूप में जीवन में क्या अपेक्षाएँ रखती हैं और महिला के रूप में जीवन से उनकी क्या-क्या उम्मीदें हैं।

12.4 प्रमुख विशिष्टताएं

नीचे इस विषय पर चर्चा की जा रही है कि लिंग भेद वृत्ति विकास को कई प्रकार से प्रभावित करता है:

12.4.1 महिलाओं की गृहिणी के रूप में भूमिका

परम्परागत रूप से महिलाओं की भूमिका गृहिणी के रूप में रही है, आजीविका अर्जक के रूप में नहीं। आज भी यही स्थिति है कि अधिकांश महिलाएँ मात्र गृहिणियाँ हैं। महिलाओं के वृत्ति-विकास की योजना बनाने में उनके विवाह तथा गृहिणी के रूप को ध्यान में रखा जाता है जबकि पुरुषों के विषय में ऐसा नहीं है। गृहिणियों के रूप की प्रमुखता के कारण उसके कामकाजी होने में बाधा आती है। उनसे घर में रहकर जीवन जीने की आशा की जाती है। अतः पुरुषों की तरह महिलाओं के जीवन में वृत्ति की कोई मुख्य भूमिका नहीं है। परिणामतः इन दोनों के वृत्ति योजना में भेद बरता जाता है। भले ही दोनों की योग्यताओं तथा रुचियों में कोई महत्वपूर्ण भेद न हो किन्तु वृत्ति की आशाओं और लक्ष्यों में अन्तर माना जाता है।

12.4.2 महिलाओं की कार्य भूमिका का अवबोधन

हमारे समाज में लड़के-लड़कियों के व्यवसाय का अवबोधन रूढ़िगत विधि से आंका जाता है। इस भेदभाव से उनके कार्यक्षेत्र की भूमिका में बचपन से अन्तर होना आरम्भ हो जाता है। संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त के मानने वालों के अनुसार, लिंग भेद की पहचान भले ही जन्म काल से हो जाती है किन्तु इसका मुख्य रूप 2-3 वर्ष की आयु में उस समय सामने आता है जब बालक-बालिकाएँ अपने लिंग भेद के प्रति सचेत हो जाते हैं। इतना ही नहीं वे वही कार्य करने के प्रति सचेष्ट हो जाते हैं जो स्त्री-पुरुष करते या जो वे सोचते हैं कि उनसे अपेक्षित हैं। परिणामस्वरूप "लिंग पहचान" धीरे-धीरे "लिंग भूमिका पहचान" में बदलने लगती है। परिणामस्वरूप लड़के पुरुषों की भूमिका व पहचान की तैयारी करने लगते हैं। लड़के कार्य के माध्यम से पहचान विकसित करते हैं। उसकी शैक्षिक,व्यावसायिक व अन्य बाह्य इच्छाएँ आशानुकूल फलित व पुरस्कृत होने लगती हैं। लड़कियों के साथ यह स्थिति नहीं है। 3-6 वर्ष की आयु में लड़कियाँ लड़कों जैसे काम करने लगती हैं क्योंकि इस काम को सम्मानजनक समझा जाता व पुरस्कृत किया जाता है किन्तु इसके बाद वे महिलाओं के काम करने लगती हैं क्योंकि इन कामों में उनकी प्रशंसा की जाती है। अतः लड़की की आत्म-प्रत्यय वह नहीं है जो वस्तुतः वह है या जो उसे होना चाहिए किन्तु वह है जैसा समाज उससे अपेक्षा करता है। स्त्री कार्य के महत्व को कोई प्रमुखता नहीं दी जाती। कामकाजी महिला के विषय में यह नहीं माना जाता कि वह आत्मसंतुष्टि के लिए काम कर रही है अपितु यह माना जाता है कि वह परिवार के सुख के लिए कमा रही है। उससे यह आशा की जाती है कि उसका उचित अवस्था पर विवाह और उसके बच्चे हो जाएँ। इसी कारण लड़कियों का झुकाव विवाह की ओर अधिक है तथा व्यवसाय की ओर कम। आजकल कुछ महिलाओं ने गृहिणी की भूमिका से परे काम करने की ठान ली है। उनकी भूमिका में अवबोधन की अधिगम प्रक्रिया में बदलाव आ रहा है जो उनकी भूमिका अवबोधन को प्रभावित कर रहा है। आज महिलाओं में परम्परागत विचारधारा व सीखना और उसकी नई रुचियों, अन्वेषणाओं और संभावनाओं के प्रति चेतना में द्वंद हो रहा हैं। परिणामस्वरूप इन परिवर्तनों के कारण उनके वृत्ति प्रतिरूप में परिवर्तन होना स्वाभाविक है।

12.4.3 महिलाओं की कामकाज में भागीदारी

हमारा संविधान बिना किसी भेदभाव के स्त्री तथा पुरुषों को कार्य या व्यवसाय का समान अधिकार प्रदान करता है। फिर भी एक बहुसंख्यक महिला वर्ग काम से वंचित है। यद्यपि पिछले दशकों में जनगणना के आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि कामकाजी महिलाओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई है यथा 1971 में 14.22% से बढ़कर 1981 में 19.67% व 1991 में 22.7%। ये आँकड़े पुरुषों की तुलना में बिल्कुल संतोषजनक नहीं हैं क्योंकि उनकी 51.56% भागीदारी है।

महिलाओं के वृत्ति-विकास पर विचार करते समय यह भी विचारणीय विषय है कि उनको किस प्रकार के काम काज की भूमिका का निर्वाह करना है।

महिलाओं के कामकाज की भागीदारी के विषय में निम्नलिखित बातें कही जा सकती हैं:

1) महिलाएँ काम की भागीदारी में पुरुषों से बहुत पीछे हैं।

2) कामकाजी महिलाओं में शहरी महिलाओं की अपेक्षा ग्रामीण महिलाओं की संख्या अधिक है।

3) महिलाएँ अधिकतर बेहुनर कार्य यथा कृषि तथा अन्य मज़दूरी के कार्य में अधिक संख्या में हैं। इस क्षेत्र में उनकी संख्या पुरुषों से अधिक है। इनमें से कुछ महिलाएँ गृह उद्योग, छोटे व्यापार, अथवा अन्य कामकाज करती हैं।

4) सार्वजनिक क्षेत्र में निजी क्षेत्र की अपेक्षा महिलाओं की संख्या अधिक हैं।

5) महिलाएँ समुदाय, समाज तथा व्यक्तिगत सेवाओं में अधिक हैं, जो उनके घर के कामकाज का ही दूसरा रूप है।

यह एक उत्साहप्रद संकेत है कि सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं के रहते हुए भी वे कामकाज के क्षेत्र में भागीदार बन रही हैं। उपर्युक्त कार्य-क्षेत्रों की तुलना में सिविल सेवाओं, प्रशासनिक सेवा, पुलिस सेवा, तथा विदेश सेवा में महिलाएँ अभी अल्पसंख्यक रूप में हैं।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1. उचित विकल्प पर सही का चिह्न (√) लगाएँ। दिए गए स्थान में शुद्ध के लिए शु. तथा अशुद्ध के लिए अशु. शब्द लिखें :

   i) इस दशक में महिलाओं की कामकाज में भागीदारी बढ़ी है। (शु./अशु.)

   ii) शहरी महिलाओं की कार्यक्षेत्र में भागीदारी ग्रामीण महिलाओं की तुलना में अधिक है। (शु./अशु.)

   iii) कृषि क्षेत्र में महिलाओं के कामकाज की प्रतिशत भागीदारी पुरुषों की तुलना में अधिक है। (शु./अशु.)

   iv) महिलाओं की समुदाय, समाज तथा व्यक्तिगत सेवाओं में प्रतिशत भागीदारी संगठित कार्यक्षेत्र की तुलना में सर्वाधिक है। (शु./अशु.)

12.4.4 महिलाओं के काम में भागीदारी को प्रभावित करने वाले कारक

परम्परा तथा आवश्यकता के कारण पुरुष परिवार के लिए रोज़ी रोटी कमाता है तथा महिलाएँ घरेलू कामकाज तथा परिवार की देखभाल करती हैं। कुछ थोडी सी महिलाएं जो कामकाज में भागीदार होती है उनके कुछ कारण इस प्रकार हैं:

1. **घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए:** सामान्यतः महिलाएँ घरेलू खर्च को चलाने के लिए घर से बाहर जाकर नौकरी करती हैं। ये सामान्यतः निम्न आय वर्ग तथा निम्न-मध्य आय वर्ग परिवारों से होती हैं। इनका कार्यक्षेत्र, सामान्यतः अकुशल, अर्धकुशल या परम्परागत व्यवसाय जैसे लिपिक, अध्यापन, नर्स आदि होता है।

2. **उच्च शिक्षा के उपयोग के लिए:** शहरों में उच्च शिक्षा प्राप्त मध्य वर्गीय महिलाएँ अपनी योग्यता को व्यर्थ न जाने देने के लिए सफेदपोश व्यवसाय अपनाती हैं। इनमें से कुछ अपने व्यवसाय के प्रति जागरूक होती हैं तथा निरंतर नौकरी करती रहती हैं। उच्च जीवन शैली की आकांक्षाएँ तथा उच्च शिक्षा भी महिलाओं को कामकाज करने के लिए अभिप्रेरित करती है।

3. **अपनी योग्यता सिद्ध करने के लिए:** ऐसी भी कुछ महिलाएँ हैं जो जीवन में कुछ उपलब्ध करना चाहती हैं तथा इसे सिद्ध करना चाहती हैं। वे उच्च शिक्षा प्राप्त करती हैं, उच्च

उपलब्धियाँ प्राप्त करती हैं; उनकी उच्च व्यावसायिक आकांक्षाएँ होती हैं और मात्र काम धंधे के लिए नहीं बल्कि उच्च वृत्ति के लिए कार्य आरंभ करती हैं। ये अधिकतर अपरम्परागत वृत्ति अपनाती हैं। उच्चतम प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करती हैं।

4. **पद गरिमा तथा सशक्तिकरण के लिए** (Status and Empowerment): समाज में यह देखा जाता है कि किसी को किस काम के बदले कितना अधिक धन प्राप्त होता है और इसी से उस व्यक्ति के पद की गरिमा तथा शक्ति सम्पन्नता जानी जाती है। किसी गृहिणी को भले ही आर्थिक कठिनाई अनुभव न होती हो किन्तु वह अपने को अवैतनिक व्यक्ति के रूप में हीनभावना से ग्रस्त पाती है और बाहर कार्यरत रहना पसंद करती है। ये महिलाएँ कई बार अपनी वृत्ति या व्यवसाय काफी आयु पर भी अपनाती हैं।

5. **गृहिणी की भूमिका से असंतुष्टिः** मध्यम आय वर्ग और उच्च मध्यम आय वर्ग की बहुत सी महिलाएँ अपने आप को एकाकी अनुभव करती हैं। उनमें से अधिकतर के लिए संभव नहीं है कि वे घर से बाहर सामाजिक तथा अन्य मनोरंजन के कार्यक्रमों में भागीदार हो सकें। उनके पति तथा बच्चे अपने कामकाज तथा अध्ययन के कारण दूर होते हैं। अतः वे ऐसी अवस्था में सांवेगिक दृष्टि से अपने आपको संतुष्ट अनुभव नहीं करतीं। घरेलू उपकरणों में सम्पन्नता या उपलब्धता के कारण उनके पास काफी समय भी होता है, अतः वे अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए घर से बाहर कोई कामकाज अपना लेती हैं।

6. **सीमित परिवारः** आजकल परिवार में 'एक या दो बच्चे बस' का प्रचलन है। बच्चे विद्यालय जाने लगते हैं तो महिलाओं के पास समय ही समय है। ऐसी स्थिति में कुछ महिलाएँ घर में ही कामकाज का कोई साधन निकाल लेती हैं तथा कुछ अन्य आय का साधन खोज निकालती हैं। बेरोज़गारी वृद्धि के कारण कभी-कभी इस आयु में रोज़गार पाना कठिन होता है।

7. **महिलाओं के लिए कामकाज के अधिक अवसरः** महिलाओं के विकास में सरकारी सक्रियण (उत्प्रेरण) के कारण पिछले कुछ समय से इनके लिए शैक्षिक तथा रोज़गार के क्षेत्र बहुत विस्तृत हुए हैं। इस प्रकार के रोज़गार के अवसर लिपिक तथा बिक्री की सेवाओं में बढ़े हैं जहाँ बहुत बड़ी संख्या में महिलाएँ कार्यरत हैं।

8. **सामाजिक तथा जीवन मूल्यों में परिवर्तनः** स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हमारे देश में महिलाओं के प्रति सामाजिक सोच तथा जीवन मूल्यों में भारी परिवर्तन आया है। इस विकास का यह परिणाम हुआ है कि महिलाओं ने शिक्षा तथा वृत्ति के क्षेत्र में अपनी क्षमता को सिद्ध किया है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

2. महिलाएँ नौकरी क्यों करना चाहती हैं? नीचे किन्हीं दो कारणों को लिखें।

....

....

....

12.4.5 महिलाओं की शैक्षिक भागीदारी

औपचारिक शिक्षा से महिलाओं को कामकाज में भागीदारी को प्रोत्साहन मिला है और इससे उनकी क्षमताओं का विकास भी निरन्तर हो रहा है। यद्यपि स्वतंत्रता के बाद महिलाओं की

साक्षरता में काफी प्रगति हुई हैं फिर भी यह पुरुषों की तुलना में बहुत कम है। उच्च शिक्षा की संस्थाओं में महिलाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

तकनीकी तथा संवृत्तिक क्षेत्रों में भी महिलाओं की संख्या में सम्मानजनक वृद्धि हुई है। इंजीनियरिंग तथा प्रौद्योगिकीय क्षेत्रों में भी महिला छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है।

12.4.6 मूल्य तथा अभिप्रेरणा

शिक्षा प्राप्ति के स्तर का सीधा संबंध लड़कों के लिए उनकी व्यावसायिक संभावनाओं से सीधा जुड़ा है जबकि लड़कियों के लिए ऐसा नहीं है। अधिकांश लड़कियाँ उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित भी नहीं होतीं। वे महाविद्यालयों में प्रवेश तो लेती हैं, किन्तु वे न तो विषयों के चुनाव में लड़कों की प्रतियोगी बनना चाहती हैं और न ही उनके समान विकास में। संभवतः महाविद्यालय की उच्च शिक्षा अच्छे परिवार में विवाह है न कि लम्बी अवधि का वृत्ति चुनाव अथवा वृत्ति प्रतिबद्धता।

महाविद्यालयी शिक्षा अपने आपमें लक्ष्य की संपूर्ण उपलब्धि है अर्थात् शिक्षा का उद्देश्य वृत्ति के लिए भावी तैयारी न होकर - अच्छी जीवन शैली, बड़े होकर जीवन में आने वाली विघ्न-बाधाओं का साहसपूर्ण सामना करना, अच्छा जीवन साथी पाना, अच्छा मातृत्व प्रदान करना आदि है। शिक्षा प्राप्ति की इस प्रकार की विचारधारा से लड़कियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने या वृत्ति ग्रहण करने की अभिप्रेरणा के लिए कोई संभावना शेष नहीं रह जाती।

12.4.7 बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यावसायिक आकांक्षाएँ

महिलाओं की वृत्ति के प्रति अभिवृत्ति तथा इसके प्रति आकांक्षाओं का निर्माण उनके विकास की आरंभिक अवस्था में होने की संभावना रहती है। ऐसी धारणा है कि उच्च शिक्षा, बुद्धि तथा श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि व्यक्ति को अच्छे व्यवसाय के लिए प्रेरित करती है। किन्तु शोध से देखने में आया है कि महिलाओं की वृत्ति के प्रति अभिवृत्ति का संबंध उनकी बुद्धि, शैक्षिक उपलब्धि तथा अन्य क्रियाकलापों के इतिहास से नहीं जोड़ा जा सकता जैसा कि पुरुषों के बारे में धारणा बनी हुई है। पुरुष अपने विद्यालय तथा महाविद्यालय की शिक्षा प्राप्ति के समय अपनी व्यवसाय संबंधी आकांक्षाओं को प्रकट करते हैं और पुरस्कार संबंधी बाह्य उपलब्धियों से भी इसका संबंध जोड़ते हैं। वे अपने भविष्य तथा व्यवसाय से जुड़े सम्मान के प्रति सजग रहते हैं किन्तु महिलाएँ उच्च शिक्षा प्राप्त करने पर भी सामान्यतः ऐसा नहीं सोच पातीं, वे वृत्ति-विहीन किसी कार्य की चर्चा करती हैं जिसका संबंध उनकी अभिरुचि तथा आकांक्षा से नहीं होता। अच्छी उपलब्धि वाली छात्राएँ भी उच्च व्यवसाय प्राप्ति की योजना के बारे में नहीं सोचतीं। समाज के सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग की लड़कियों के बारे में यह स्थिति और भी विकट है। इन छात्राओं के बारे में उनकी अच्छी बौद्धिक क्षमता तथा अच्छी उपलब्धि के रहते हुए भी उच्च शिक्षा तथा उच्च व्यवसाय प्राप्त करने की संभावनाएँ समाप्तप्रायः हैं। संक्षेप में आत्म समर्थन का संबंध सामाजिक समर्थन से जुड़ा हुआ है। इनके लिए चिन्ता का विषय वृत्ति नहीं है, किन्तु अच्छी पत्नी तथा अच्छी माँ बनना श्रेयस्कर माना जाता है।

12.4.8 सांस्कृतिक तथा वातावरण संबंधी कारक

लड़कियों के वृत्ति निर्धारण में माता-पिता की अभिवृत्ति, घर की आर्थिक स्थिति, तथा सांस्कृतिक अवसर आदि की भूमिका मुख्य है। अनेक शोधकार्यों से पता चला है कि उच्च आर्थिक सामाजिक घरानों की पृष्ठभूमि की लड़कियाँ विशेषकर जिनके अभिभावक (पिता विशेष रूप से) सुशिक्षित हैं अनुपाततः उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम रहती हैं। वे कामकाजी महिलाएँ जो अपने कार्य तथा घरेलू परिस्थितियों से संतुष्ट हैं अपनी लड़कियों को उच्च शिक्षा के लिए अभिप्रेरित करती हैं। वे लड़कियाँ जिनका संपर्क उच्च आदर्श की महिलाओं से होता रहता है या आस पड़ोस में उनके संपर्क में आती हैं उनका दृष्टिकोण अपने वृत्ति के विकास के प्रति बड़ा रचनात्मक होता है।

12.4.9 वृत्ति-उन्मुख बनाम गैर-वृत्ति-उन्मुख महिलाएं

वृत्ति विकास के क्षेत्र में महिलाओं को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है: वृत्ति-उन्मुख तथा ग़ैर-वृत्ति-उन्मुख। ग़ैर-वृत्ति-उन्मुख महिला अपने विवाह तथा पारिवारिक संसार में रत रहती हैं या फिर आवश्यकता पड़ने पर ग़ैर-वृत्तिक (non-career) क्षेत्र में लगी रहती हैं। वृत्ति-उन्मुख महिलाओं को भी दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - एक वे जो महिलाओं के लिए निर्धारित कामकाज करती हैं तथा दूसरी वे जो पुरुषों द्वारा अपनाए गए व्यवसायों में प्रवेश करती हैं। प्रथम प्रकार की वृत्ति की महिलाएँ अपने घर से बाहर काम करती हैं किन्तु इस काम में महिलाओं का ही एकाधिकार होता है या फिर अन्य कोई निश्चित प्रकार का काम होता है। इनकी अभिवृत्ति परिवार और संगठित परिवार और घर की ओर होती है तथा घर-परिवार तथा काम को मिला जुला समझती हैं। यह वर्ग सामान्यतः सफल माना जाता है तथा इसमें महिलाओं के गुणों की प्रधानता होती है। जो महिलाएँ अपरम्परागत तथा पुरुषों के कार्यक्षेत्र को चुनती हैं वे पहले वर्ग की तुलना में वृत्ति के प्रति अधिक निष्ठावान होती हैं। ये अपरम्परागत व्यवसाय वाले सफल आदर्श व्यक्तियों से प्रभावित होती हैं। इनके व्यक्तित्व में पुरुषों के गुण प्रभावी होते हैं। इनमें परम्परागत व्यवसाय अपनाने वाली महिलाओं की तुलना में व्यक्तित्व के गुणों में भी भिन्नता पाई जाती है। ये महिलाएँ अपने क्षेत्र में 'अग्रगामी वृत्ति महिलाओं' (Pioneer Career Women) के रूप में पहचानी जाती हैं। इस क्षेत्र में हुए शोध कार्य से ज्ञात हुआ है कि इनकी सफलता की कुंजी मात्र आर्थिक लाभ नहीं है अपितु उनकी उपलब्धियाँ, अभिप्रेरणा तथा कार्य के प्रति संतुष्टि है।

12.5 महिलाओं के वृत्ति प्रतिरूप

पुरुषों की तुलना में महिलाओं का वृत्ति-विकास भिन्न तथा पेचीदा होने के कारण उनके वृत्ति प्रतिरूप या उनके क्रम में भी भिन्नता पाई जाती है। विभिन्न अध्ययनों के आधार पर महिलाओं को इस दृष्टि से दो वर्गों में विभाजित किया जाता है - अपने क्षेत्र में अग्रगामी महिलाएँ या व्यवसाय को दृढतापूर्वक स्वीकार करने वाली और परम्परागत महिलाएँ जो संपूर्ण समय गृहिणी के रूप में घर के कामकाज में लगी रहती हैं। इनका वर्गीकरण तुलनात्मक दृष्टि से इस प्रकार किया जा सकता है - अपरम्परागत या वृत्ति-उन्मुख महिलाएँ (career women) तथा परम्परागत महिलाएँ या गृहिणी महिलाएँ। सुपर (1957) द्वारा दी गई एक वर्गीकरण प्रणाली पश्चिमी दृष्टिकोण पर आधारित है। वह महिलाओं की वृत्तियों का विभाजन करते समय निम्नलिखित सात वर्गों का उल्लेख करता है:

i) **स्थिर गृहिणी वृत्ति प्रतिरूप (The stable home making career pattern)**: इस वर्ग में प्रमुखतः वे विवाहित महिलाएँ आती हैं जिनका कोई महत्वपूर्ण कार्य अनुभव नहीं होता।

ii) **परम्परागत वृत्ति प्रतिरूप**: इस वर्ग में वे विवाहित महिलाएँ सम्मिलित हैं जो सामान्य शिक्षा समाप्ति के बाद अनेक वर्षों तक कार्य करती हैं तथा बाद में पूर्ण समय के लिए गृहिणी की भूमिका निभाती हैं।

iii) **स्थायी कार्य वृत्ति प्रतिरूप**: इस वर्ग में वे महिलाएँ आती हैं जिनकी वृत्ति ही जीवन कार्य होता है।

iv) **द्विमार्गी वृत्ति प्रतिरूप** (The double-track career pattern): इस वर्ग में वे महिलाएँ आती हैं जो वैवाहिक जीवन के साथ साथ वृत्ति का निर्वाह भी करती हैं।

v) **बाधित वृत्ति प्रतिरूप** (The interrupted pattern): इस वर्ग में वे महिलाएँ आती हैं जो पहले कोई व्यवसाय अपनाती हैं, विवाह के कारण व्यवसाय त्याग देती हैं तथा पुनः व्यवसाय में लौट आती हैं।

vi) **अस्थिर वृत्ति प्रतिरूप**: इस वर्ग में वे महिलाएँ आती हैं जो अनियमित अर्जन के आर्थिक कारणों से कभी कामकाज करती हैं और कभी छोड़ देती हैं।

vii) **बहु प्रयासित वृत्ति प्रतिरूप** (Multiple trial career pattern): इस वर्ग की महिलाएँ एक के बाद एक असंबद्ध कामकाज अपनाती व छोड़ती हैं और जीवन में कोई स्थायी या सही जीवन कार्य नहीं कर पातीं।

उपर्युक्त प्रतिरूपों पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि महिलाओं का वृत्ति अभिमुख तथा अभिप्रेरणा पुरुषों से भिन्न होती है। यह उनके वृत्ति तथा विवाह के प्रति आवश्यकताओं, आकांक्षाओं तथा अभिवृत्तियों पर आधारित होता है। वास्तव में, महिलाओं का वृत्ति प्रतिरूप उनकी सांस्कृतिक तथा शैक्षिक पृष्ठभूमि पर आश्रित होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

3. लड़कियों के लिए कोई दो वृत्ति प्रतिरूप लिखें।

....

....

....

....

12.6 युवतियों की वृत्ति संबंधी कठिनाइयाँ

अपनी वृत्ति क्षमता के विकास के लिए बालिकाओं को अनेक कठिनाइयों का सामना करता पड़ता है यथा:

12.6.1 लिंग आधारित भेदभाव

लिंग आधारित भेदभाव घर, शिक्षा संस्था, कार्यक्षेत्र से लेकर समस्त समाज तक पाया जाता है। इस प्रकार का भेद उनके वृत्ति विकास में संरचनात्मक का अभिवृत्तीय बाधा बन कर आते हैं।

i) **घर में लिंग आधारित भेदभाव:** बालक-बालिका में लिंग के आधार पर भेदभाव परिवार में

ही आरंभ हो जाते हैं। यह भेद गर्भधारण से आरंभ हो जाता है। अप्रार्थित तथा अवांछित बालिका, बालक की तुलना में कम भोजन, प्यार तथा लालन पालन में उपेक्षित रहती है। उसकी शिक्षा को प्राथमिकता नहीं दी जाती, उसे घर के क्रियाकलाप को छोड़ अन्य बाहर के काम से वर्जित रखा जाता है। वह घर में छोटे बच्चों को खिलाती है। उसका विकास इस बात को लेकर होता है कि वह स्त्रियोचित व विवाह लक्षित व्यवहार करे। अतः उसका शारीरिक, व्यक्तिगत, सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास सीमित कर दिया जाता है। उसका पालन-पोषण उसे उच्च शिक्षा देने तथा उच्च प्रशिक्षण या व्यवसाय में भेजने के लिए नहीं किया जाता।

ii) **शैक्षिक संस्थाएँ**: घर के बाद विद्यालय शिशु के व्यवहार को प्रभावित करने वाली दूसरी संस्था विद्यालय होता है। यहाँ भी बच्चों में लिंग आधारित भेदभाव किया जाता है। यथा- पुस्तकों, पाठ्यक्रमों, विषय के चुनावों, समाज-उपयोगी-उत्पादक-कार्य (SUPW) की क्रियाएँ तथा कुछ अन्य पाठ्य-सहगामी क्रियाओं आदि के माध्यम से बच्चों में भेदपूर्ण व्यवहार होता है। ये क्रियाएं व्यक्ति के जीवन का अंग बन जाती हैं। महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर मन में बैठने के बाद ये भावनाएँ भेदपूर्ण व्यवहार और प्रसारित किया जाता है। इस प्रकार बालिकाओं की शिक्षा बालकों की तुलना में उनके शैक्षिक, व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत विकास के अनुसार नहीं होती। यहाँ तक कि अध्यापकों की सेवा-पूर्व शिक्षा तथा सेवाकालीन प्रशिक्षण में भी शिक्षकों के इस लिंग भेद व्यवहार को विसुग्राही बनाने की अवहेलना करते हैं।

iii) **कार्यक्षेत्रः** रोज़गार के क्षेत्र में सभी रोज़गार नियोजक महिलाओं की नियुक्तियाँ पुरुषों की तरह स्वागत योग्य नहीं मानते। ये महिलाओं की नियुक्ति में संकोच अनुभव करते हैं। महिला की नियुक्ति के समय यह धारणा बनी रहती है कि इसकी प्राथमिक कार्य की अपेक्षा विवाह के बाद बच्चों तथा गृहस्थी का उत्तरदायित्व निर्वाह की होगी।

पुरुष की तुलना में नियुक्ति की ही नहीं अपितु वेतन की दृष्टि से भी भेद किया जाता है। सार्वजनिक क्षेत्रों को छोड़ अन्य संस्थाओं में उसे गृहस्थ जमाने तथा शिशुओं के पालने के लिए उचित अवकाश तक नहीं दिया जाता और तो और उसे यौन उत्पीड़न तक का कष्ट भोगना पड़ सकता है।

iv) **समाज में**: अनेक संस्थाएँ लिंग भेदभाव अधिक करती हैं। हर बालिका से परिवार, पड़ोस तथा समाज के अन्य समुदायों की यही आशा होती है कि वह परम्परागत महिलाओं के ढाँचे में ढले और जिसमें 'मुझे' की कोई धारणा न हो। उससे आशा की जाती है कि वह आज्ञाकारी हो, निष्ठावान गृह संचालिका हो, आज्ञाकारी पत्नी हो, आदर्श पुत्रवधू हो तथा त्यागमूर्ति माता हो। वह विनीत, मृदुभाषी, गंभीर, लज्जावान, आज्ञाधीन, सहनशील हो और पति या उसके परिवार के सदस्यों द्वारा किए किसी अत्याचार का प्रतिवाद न कर, सहन

कर ले। अन्यथा वह असंस्कृत तथा गृह भंजक कहलाएगी। इस प्रकार की लिंग भेद आधारित भावनाएँ बालिकाओं के वृत्ति विकास में बाधक बनती हैं क्योंकि वे ऐसी धारणाओं से आज्ञाकारी गृहिणी बनना पसंद करेंगी, निर्णायक भूमिका निभाने वाली तथा वृत्ति के प्रति अभिमुख नहीं बन सकतीं।

12.6.2 तुच्छ आत्म-छवि व आत्म-सम्मान

पहले इस बात पर प्रकाश डाला जा चुका है कि कुछ समाजों में लड़कियों के प्रति एक विशेष व्यवहार, अभिवृत्ति तथा आशा की अपेक्षा की जाती है। जन्म पूर्व से लेकर मृत्यु तक जो भेदमूलक व्यवहार उसके साथ किया जाता है, उसकी आत्म-छवि निर्माण का सबसे अच्छा द्योतक है। सामान्यतः जन्म से पूर्व लड़की के जन्म की आशा नहीं की जाती, जन्म पर प्रसन्नता नहीं मनाई जाती, उसकी भोजन/पोषण, स्वास्थ्य व शिक्षा में उपेक्षा की जाती है, बचपन से घर में काम में सहायक के रूप में प्रयुक्त होती है, बाहर भी ऐसा समझा जाता है। उसे दबाया जाता है। जीवन भर उपेक्षा की जाती है और वह काम भोग की वस्तु मानी जाती है। अतः वह अपनी हीन आत्म-छवि का निर्माण कर लेती है। लड़कियों के प्रति भेदमूलक व्यवहार लगभग सभी संस्कृतियों, जातियों, तथा सभी वर्ग के सामाजिक-आर्थिक स्तर के लोगों के बीच पाया जाता है। अपने बारे में क्षुद्र अथवा हीन भावना आ जाना व्यक्तित्व विकास में एक बड़ी भारी मनोवैज्ञानिक बाधा है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

4. विद्यालय स्तर पर लिंगाधारित तीन भेदमूलक व्यवहारों को सूचीबद्ध करें।

....

....

....

5. उल्लेख करें कि लड़कियों में अपने प्रति हीनता की भावना क्यों जन्म लेती है।

....

....

....

12.6.3 युवतियों की शिक्षा क्षेत्र तक पहुँच

बालिकाओं की शिक्षा की कुछ प्रमुख समस्याएँ/कठिनाइयाँ इस प्रकार हैं:

i) **सामाजिक समस्याएँ:** बालिकाओं की शिक्षा के प्रति समाज का दृष्टिकोण रचनात्मक नहीं है। बालिकाओं की शिक्षा को प्रमुखता नहीं दी जाती। इसमें अन्य बाधक तत्त्व हैं - पर्दे का रिवाज़, बाल विवाह, अभिभावकों का निरक्षर होना, घर पर शैक्षिक वातावरण का अभाव, विद्यालयों में पुरुष अध्यापक तथा लड़कियाँ से घर का कामकाज करवाना।

ii) **आर्थिक समस्याएँ:** जहाँ परिवार में कोई भरण-पोषण करने वाला न हो तथा चहेते पुत्र की शिक्षा पर पैसा खर्चना संभव न हो वहाँ बालिका की पढ़ाई के खर्च की बात कौन सोच सकता है। ऐसी स्थिति में सहोदरों की देखभाल कौन करेगा, घर के कामकाज़ कौन करेगा, पैसा कमाकर कौन घर की आय बढ़ाने में सहयोग देगा? जो परिवार पढ़ाई का खर्च उठा सकते हैं, वे केवल लड़के की पढ़ाई को ही प्राथमिकता देंगे।

iii) **शैक्षिक समस्याएँ:** शिक्षा प्राप्ति में एक बड़ी बाधा यह भी है कि क्षेत्र में दूर-दूर तक प्राथमिक शिक्षा के बाद के विद्यालय नहीं हैं। छठे अखिल भारतीय शिक्षा सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्र में 76% तथा शहरी क्षेत्र में 26% जनसंख्या के लिए प्राथमिक शिक्षा के बाद कुछ ही विद्यालय उपलब्ध हैं। इन विद्यालयों में फर्नीचर, पानी, श्यामपट तथा शौचालय जैसी मूलभूत सुविधाओं का भी अभाव है। लड़कियों के विद्यालय में कम संख्या में पहुचने के अन्य कारण हैं - अनाकर्षक पाठ्य पुस्तकें, पुरुष अध्यापक, खेलकूद, अन्य पाठ्यक्रम संबंधी क्रियाकलापों का अभाव, विद्यालय लगने का प्रतिकूल समय। गाँव में हाई स्कूल तक की पढ़ाई पूरी करने वाली लड़कियां 3-4 होती हैं और उनके लिए गाँवों में आगे की शिक्षा या प्रशिक्षण की सुविधा का अभाव होता है। यदि बालकों के लिए कुछ विद्यालय हैं भी तो गाँवों से बहुत दूर दराज के क्षेत्र में। विद्यालय में छात्राओं के लिए छात्रावासों की कमी है। एक ओर तो सामाजिक कारणों से लड़कियाँ उच्च शिक्षा या प्रशिक्षण के लिए तैयार नहीं होतीं, दूसरी ओर उनके लिए इन सुविधाओं का नितान्त अभाव है।

जहाँ बालिकाओं के लिए शिक्षा की सुविधाएँ उपलब्ध हैं वहाँ परम्परागत पाठ्यक्रम होने के कारण ये जीविका पाने के लिए उपयुक्त नहीं हैं। कभी-कभी उन्हें ये पाठ्यक्रम इसलिए लेने पड़ते हैं कि अपनी शिक्षा शीघ्र पूरी कर सकें। प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनिकरण के बाद से अधिकांश लड़कियाँ आठवीं कक्षा तक की पढ़ाई कर माध्यमिक स्तर तक पहुँचने लगी हैं। ये छात्राएँ विज्ञान और गणित में अच्छे अंक प्राप्त नहीं कर पातीं और परिणामस्वरूप ये वे मृदु विकल्प व्यवसाय अपनाती हैं जिनमें इन विज्ञान व गणित की आवश्यकता नहीं होती हैं। ये गृहविज्ञान के विषय अपनाती हैं जैसे सिलाई, पाकशास्त्र, बेकरी आदि। इन कारणों से ये तकनीकी तथा इंजीनियरिंग आदि व्यवसायों में प्रवेश नहीं ले पातीं।

चूँकि शिक्षा के स्तर का सीधा संबंध वृत्ति-विकास से है, उपर्युक्त कारण लड़कियों की उच्च शिक्षा में बाधक बन कर आ खड़े होते हैं और परिणामस्वरूप उनका वृत्ति-विकास बाधित होता है।

12.6.4 दोहरी भूमिका

जिस समय महिला अपने वृत्ति या व्यवसाय में प्रवेश करती है तो उसे साथ-साथ गृहिणी, माँ

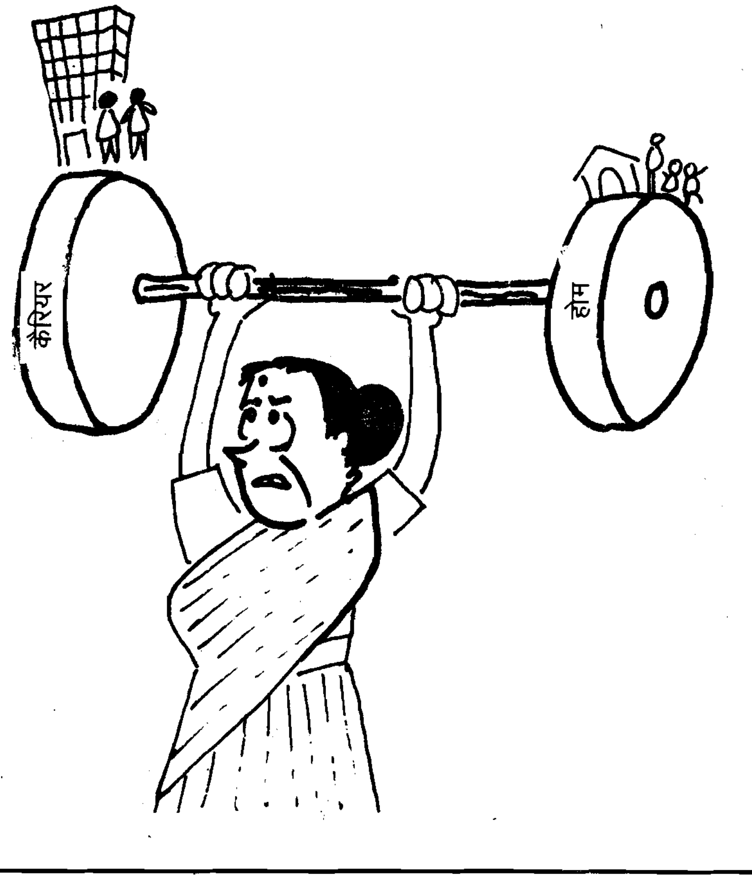

तथा पुत्रवधु आदि की भूमिका भी निभानी पड़ती है। उसे आरंभ से ही इस मानसिकता के साथ तैयार किया जाता है कि उसके जीवन की प्राथमिकता घर चलाना है, नौकरी उसके बाद आती है।

12.6.5 भूमिका द्वंद्व

कार्यरत महिलाओं, विशेषकर उच्च शिक्षा प्राप्त गृहिणियों को द्वंद्व की अनुभूति से गुज़रना पड़ता है। वह अपने परिवार और समाज की तरह गृहिणी और मातृत्व की अपनी भूमिका के साथ अपने वृत्ति को भी बराबर का महत्व देती है। यदि वह अपने एक दायित्व की उपेक्षा कर दूसरे को महत्व देती है तो परिवार और पति के प्रति उसमें द्वंद्व की भावना जागृत हो जाती है। कई बार इस कष्टपूर्ण अनुभूति से छुटकारा पाने के लिए वह नौकरी छोड़ने को बाध्य हो जाती है। इससे उसका वृत्ति विकास तो रुकता ही है, साथ ही इस उदाहरण का अन्य बालिकाओं पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है।

12.6.6 सफलता का भय

यह देखा जाता है कि बहुत सी महिलाएँ ऐसे व्यवसाय अपनाती हैं जो उनके गृहकार्य का एक प्रकार से विस्तार मार्ग होता है यथा - शिक्षण, नर्सिंग, सचिव, व्यक्तिगत सहायक, समाज सेवा आदि। महिलाओं द्वारा किए जाने वाले ऐसे कार्यों को वह महत्व नहीं दिया जाता जो पुरुषों द्वारा किए जाने वाले कामों को दिया जाता है। महिलाओं द्वारा 'विशेष' प्रकार के ही व्यवसायों के चुनने के दो प्रमुख प्रयोजन होते हैं - प्रथम, तो यह कि वृत्ति चुनाव से पहले वे अपने विवाह और सामाजिक मान्यता को प्राथमिकता देती हैं। दूसरे, महिलाएँ अधिक पदोन्नति से उत्प्रेरित न होकर विमुख रहती हैं। वे परम्परागत व्यवसायों को अपना कर अपने को अधिक सुरक्षित अनुभव करती हैं, अपरम्परागत व्यवसाय अपना कर नहीं। सामान्यतः यह धारणा बनी हुई है कि पुरुष जितना ऊँचा पद पाएगा वह उतना अच्छा पति माना जाएगा तथा पत्नी जितनी ऊँची पदवी पाएगी वह उतनी अच्छी गृहिणी का दायित्व नहीं निभा सकेगी।

12.6.7 व्यवसाय के चयन के समय बाधाएँ

महिलाएँ कई अप्रत्याशित कारणों से किसी रोज़गार को अपनाने के लिए बाध्य होती हैं यथा - किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति की परिवार में मृत्यु, तलाक अथवा अन्य आर्थिक आपत्ति। किन्तु इस स्थिति में यह आवश्यक नहीं कि उसे उसकी योग्यता अथवा इच्छा के अनुसार रोज़गार मिले है। इस तरह उसका वृत्ति संबंधी सरोकार नहीं बन पाता।

किन्तु अन्य आपात स्थितियाँ या कठिनाइयाँ भी महिला के जीवन में आती हैं जिनके कारण उसे कोई वृत्ति अपनानी पड़ती है। ये हैं:

i) लड़कियों को लड़कों की तुलना में वृत्ति के चुनाव संबंधी पूर्ण जानकारी से अवगत नहीं कराया जाता।

ii) लड़कों के वृत्ति चुनाव में सभी लोग उसके वेतन तथा पद के महत्व पर बल देते हैं किन्तु लड़कियों की स्थिति में इसका अभाव पाया जाता है। उनके लिए किए गए व्यवसाय संबंधी चुनाव में न वेतन का ध्यान रखा जाता है और न ही पद गरिमा का।

iii) लड़कियों के सम्मुख वृत्ति चुनाव की अनेक सीमाएँ रखी जाती हैं और उन्हें इसका चुनाव करने से पूर्व कहा जाता है कि वे अपनी गृहिणी की भूमिका को महत्व दें।

iv) महिलाएँ इस बात के प्रभाव में रहती हैं कि पुरुष या समाज उनके वृत्ति के विषय में जो निर्णय ले रहा है वह उचित है।

v) लड़कियों के लिए उच्च शिक्षा तथा प्रशिक्षण के विकल्प बहुत सीमित हैं।

vi) क्योंकि पति और उसके घर को सदा प्राथमिकता दी जाती है, अतः लड़कियाँ वृत्ति के चुनाव से पूर्व विवाह की प्रतीक्षा करती हैं।

vii) भले ही लगभग सभी व्यवसायों में प्रवेश लड़कियों के लिए भी खुला है किन्तु वे इन सुविधाओं के प्रति जागरूक नहीं होतीं तथा इनके प्रशिक्षण के लिए उन्हें आर्थिक सम्बल भी नहीं मिल पाता।

viii) सामान्यतः लड़कियों को अपनी योग्यता, अभिरुचि तथा कुशलताओं का स्वयं ज्ञान नहीं हो पाता और ये बातें वृत्ति चुनाव के प्रेरक कारण हैं। सामान्यतः लड़कियों में यह धारणा होती है कि वे विज्ञान तथा गणित में कमज़ोर हैं और वे सामाजिक विज्ञान तथा गृहविज्ञान में अधिक कुशल हैं।

xi) लड़कियों को व्यवसाय चुनने के लिए आदर्श-पात्र नहीं मिल पाते जिनके अनुसरण या प्रेरणा से वृत्ति का चुनाव कर सकें।

उपर्युक्त प्रभाव यद्यपि आन्तरिक तथा बाह्य कारणों का परिणाम हैं किन्तु निश्चित रूप से इनके अभाव का कुप्रभाव उनके वृत्ति के चुनाव पर पड़ता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

6. लड़कियों के वृत्ति-विकास में आने वाली किन्हीं तीन कठिनाइयों के विषय में लिखिए।

....

....

....

....

....

7. लड़कियों के वृत्ति चयन में आने वाली प्रमुख बाधाओं का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

12.7 अध्यापकों की भूमिका

उपर्युक्त विवेचना से इस बात के स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि महिलाओं की योग्यता का विकास आधा अधूरा है। क्योंकि विद्यालय से समाज के अभिकरण के रूप में यह अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यार्थी की क्षमताओं का विकास करें। अतः नीचे ऐसे क्षेत्र सुझाए जा रहे हैं जिनमें हस्तक्षेप से लड़कियों के वृत्ति-विकास में सहायता की जा सकती है।

12.7.1 बालिकाओं की शिक्षा के उपागम

शिक्षक का बालिकाओं की शिक्षा के विकास में यह दृष्टिकोण होना चाहिए कि इस माध्यम से वह मानव संसाधन का विकास कर रहा है। उन्हें बालिकाओं की व्यक्तिगत सहायता और

प्रोत्साहन द्वारा यह प्रयत्न करना चाहिए कि वे उनमें निहित योग्यताओं की पहचान और विकास करें। उन्हें पहले तो अपनी ही लिंगभेद संबंधी विचारधारा पर पुनः विचार करना चाहिए क्योंकि इस प्रकार की धारणा बालिकाओं के वृत्ति-विकास में बाधक बनती है। उन्हें चाहिए कि वे लिंग भेद के आधार पर विषयों के चुनाव, हॉबी तथा अन्य क्रियाकलापों को न बाँटें। भेदभाव बरतने से उनका विकास रुकता है तथा समाज में नई भूमिका निभाने में बाधा उत्पन्न होती है।

12.7.2 सीखने का अनुकूल वातावरण

अध्यापक को चाहिए कि वह सीखने के अनुकूल वातावरण का निर्माण करे। उसे चाहिए कि वह बालिकाओं के बारे में घिसी पिटी उहापोह युक्त धारणाओं को प्रोत्साहन न दे। वह ध्यान रखे कि बालिकाओं में तकनीकी योग्यताओं के प्रति भय, चिन्ता, भीरुता, निष्क्रियता, पराङ्मुखता, दब्बूपन, तुकनमिजाजी, अयोग्यता की भावना जाग्रत न हो। अध्यापक को चाहिए कि उनमें इस प्रकार के दबाव या तनाव का सामना करने का साहस जगाए और उनमें अपनी क्षमताओं के प्रति सम्मानजनक और रचनात्मक भावना का विकास हो। अध्यापक को चाहिए कि बड़ों द्वारा बन गई उनके प्रति दुर्भावनाओं का निराकरण करे और उन्हें सहयोग दे ताकि उनमें आत्मसम्मान की भावना जागृत हो।

12.7.3 वृत्ति संबंधी सूचनाएँ और साहित्य उपलब्ध कराना

लड़कियों को वृत्ति संबंधी सूचनाओं की बहुत आवश्यकता होती है। उनके सम्मुख कार्य - संसार की खिड़की खुलने से उन्हें इनको चुनने और तैयार करने के लिए भी प्रेरणा मिलेगी। वृत्ति-संबंधी जानकारी प्राथमिक कक्षाओं से आरंभ हो जानी चाहिए। यहाँ अध्यापक को चाहिए कि वह इनका तालमेल विभिन्न विषयों को पढ़ाते समय कराता रहे। वह पुस्तकालयाध्यक्ष से कह सकता है कि वृत्ति चुनाव संबंधी सामग्री की व्यवस्था पुस्तकालय में करे। इस प्रकार के साहित्य से लड़कियों को अपने वृत्ति नियोजन तथा इसके चयन संबंधित निर्णय में प्रेरणा मिलेगी।

12.7.4 भूमिका प्रतिरूप प्रस्तुत करना

पहले भी संकेत दिया जा चुका है कि लड़कियों के सम्मुख व्यवसाय में सफल ऐसे चरित्र/व्यक्ति/या पात्र का अभाव होता है जिसे वे आदर्श मानकर उसका अनुसरण कर सकें। उन्हें ऐसी महिलाओं के विषय में जानकारी दी जाए जिनकी उल्लेखनीय उपलब्धियाँ रही हों, वृत्ति अभिमुख रही हों, तथा जीवन में सफलता भी मिली हो। वे महिलाएँ जो व्यक्तिगत उन्नति की बजाय केवल अर्थ कमाने के लिए काम करती हैं, उनके चरित्र में द्वंद्व उत्पन्न हो जाता है और आत्म-योग्यता का भाव भी नहीं रहता। ऐसी महिलाएँ कभी आदर्श और अनुकरणीय नहीं हो सकतीं। आदर्श और अनुकरणीय महिलाएँ परम्परागत तथा अपरम्परागत व्यवसायों से चुनी जानी चाहिएँ। जो अपनी वृत्ति तथा जीवन पद्धति से पूर्ण संतुष्ट हों और महिला के रूप में जिन्हें आत्मसम्मान का भाव भी हो। इसी प्रकार की महिलाओं के अनुसरण से लड़कियाँ आत्म-छवि में सुधार कर सकती हैं, व्यवसाय के चुनाव में आत्मविश्वास विकसित कर सकती हैं तथा चुने हुए वृत्ति को उच्च सीमा और आदर्शों तक पहुँचा सकती हैं।

महिला आदर्श चरित्रों को छात्राओं के सम्मुख प्रस्तुत करने की कई विधियाँ अपनाई जा सकती हैं। यथाः

1. आदर्श सफल चरित्रों को विद्यालय में भाषण के लिए आमंत्रित किया जाए। वे इन्हें अपनी उपलब्धियों, कार्यों और उन्हें करने की विधियों से अवगत कराएँ। जीवित चरित्रों को छात्राओं के सम्मुख प्रस्तुत करना एक आदर्श विधि है क्योंकि वे बातचीत द्वारा उनसे अपनी व्यक्तिगत आशंकाओं का समाधान कर सकती हैं तथा अपनी कठिनाइयाँ रख सकती हैं।

2. अध्यापक स्वयं परम्परागत तथा ग़ैर-परम्परागत व्यवसायों में सफल होने वाली महिलाओं के विषय में चर्चा कर सकते हैं।

3. विद्यालय विभिन्न व्यवसायों, उद्योगों अथवा सेवा में सफल महिलाओं की कार्य संबंधी जानकारी उनके कार्य एकत्र करके बालिकाओं को दे सकते हैं, यथा - शिक्षा में प्रथम

स्थान प्राप्त करने वाली, अन्य पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में सम्मानित होने वाली, पुरस्कार प्राप्त करने वाले, नेता, समाजसेवी, लेखक, प्रतिष्ठित शोधकर्ता, सेना तथा पुलिस सेवाएँ आदि। लड़कियों से स्वयं भी इस प्रकार की सामग्री एकत्र कराई जा सकती है।

4. संस्थान के पूर्व प्रतिष्ठित छात्रों के चित्र भी प्रेरणास्वरूप प्रदर्शित किए जा सकते हैं। इन महिलाओं को विचार विमर्श के लिए विद्यालय आमंत्रित किया जा सकता है।

5. महिला कर्मचारियों की विशेष उपलब्धियों को प्रमुखता से दिखाया जा सकता है अथवा सामूहिक आयोजनों के समय इनको प्रदर्शित किया जा सकता है।

6. स्थानीय महिलाओं तथा अभावग्रस्त परिवारों की महिलाओं की उपलब्धियों को भी दिखाया जा सकता है।

आदर्श महिलाओं के चरित्रों या कार्यों का प्रदर्शन विद्यालय तथा महाविद्यालय के सभी स्तरों पर किया जा सकता है। इसमें लड़कियों के वृत्ति विकास में सहायक होगा।

12.7.5 व्यक्तिगत सहायता उपलब्ध कराना

उपर्युक्त युक्तियाँ सभी लड़कियों के लिए उपयुक्त हों यह आवश्यक नहीं। कुछ को अलग से व्यक्तिगत मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। ये वे लड़कियाँ हैं जिनमें सशक्त लिंग-हीन भावना, परम्परागत विकास, गृह व सामुदायिक वातावरण के कारण विकसित हो चुकी होंगी। उनके लिए अपने व्यक्तित्व के विषय में उच्च स्वयं-अभिधारणा बनाना या उसकी अधिक प्रगति करना कठिन है। वे अपने लिए शिक्षा प्राप्ति के महत्व को नहीं समझतीं और विद्यालय की आरंभिक कक्षाओं में पढ़ाई को तिलांजलि दे देती हैं। इस प्रकार की लड़कियों को विशेष ध्यान देने आवश्यकता है। यदि अध्यापिका ऐसी लड़कियों में विशेष रुचि समर्थन देकर तथा देखरेख कर उन्हें सीमित कोठरी से निकाल कर आत्म-सम्मान का भाव जगा सके तो यह एक अद्वितीय कार्य होगा। किन्तु स्वयं अध्यापिका के पास इनकी ओर व्यक्तिगत ध्यान देने के लिए समय का अभाव है, अतः उन्हें चाहिए कि इस प्रकार की लड़कियों की पहचान करके उन्हें प्रशिक्षित उपबोधक के पास भेजें।

बोध प्रश्न

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान में अपने उत्तर लिखिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

7. लड़कियों के वृत्ति-विकास के लिए अध्यापिका कौन-कौन से तीन मुख्य कार्य कर सकती है?

....

....

....

8. अध्यापिका छात्राओं को किस प्रकार वृत्ति संबंधी जानकारी दे सकती है? इन्हें सूचीबद्ध कीजिए।

....

....

....

12.8 अभिभावकों की भूमिका

लड़कियों के वृत्ति-विकास में अभिभावकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। यहाँ उनका दायित्व मात्र वृत्ति-संबंधी अवसर तथा सुविधाएँ प्रदान करने तक सीमित न होकर उन्हें ऐसे वातावरण में रखना है जो उसके संपूर्ण विकास में सहायक सिद्ध हो। अभिभावक लड़कियों के वृत्ति-विकास के लिए निम्नलिखित सहयोग दे सकते हैं:

i) अभिभावकों की लड़की के बारे में यह धारणा बननी चाहिए कि वह अपने आप में महत्वपूर्ण व्यक्ति है जिसे इस संसार में विकसित होने और आनन्द भोगने का पूरा अधिकार है। उन्हें अपनी पुत्रियों का पालन पोषण इस प्रकार करना चाहिए कि उनमें दोनों लिंगों के रचनात्मक गुणों का विकास हो।

ii) इस बात की तुरन्त आवश्यकता है कि अभिभावक अपनी लड़कियों की शिक्षा के महत्व को समझें। उन्हें इस धारणा को त्याग देना चाहिए कि वे अपनी लड़कियों को केवल इसलिए पढ़ा-लिखा रहे हैं कि उनका अच्छे घर में विवाह हो या समय-असमय या आपात् काल में वह उनके काम आए। अभिभावकों की लड़कियों को शिक्षा देने में रुचि होनी ही चाहिए।

iii) अभिभावकों को परम्परा से चली आ रही इस भ्रामक धारणा का त्याग करना चाहिए कि पुत्र उनकी आर्थिक सम्पन्नता में सहायक होता है तथा पुत्रियाँ तो 'पराया धन' होती हैं। बाल विवाह के स्थान पर लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता मिलनी चाहिए। आजकल तो लड़कियों के उत्थान या उद्धार के लिए सरकार की ओर से उन्हें निःशुल्क शिक्षा, पोशाक, छात्रवृत्ति तथा अन्य सुविधाएँ भी दी जा रही हैं। अभिभावकों को इन सुविधाओं के बारे में प्रचार माध्यमों से जानकारी दी जाती है। उन्हें इन सुविधाओं का लाभ उठाना चाहिए।

iv) ग्रामीण और आर्थिक क्षेत्र से पिछड़े परिवारों को यह जान लेना चाहिए कि वे लड़कियों को इसीलिए कामधंधे में न लगाएँ कि उनके द्वारा अर्जित धन उसके भाई की पढ़ाई लिखाई में काम आए। लड़के और लड़कियाँ दोनों दूर शिक्षा के माध्यम से अपनी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं और साथ साथ परिवार के लिए कुछ कमा भी सकते हैं।

v) सरकार ने लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा के विकास के लिए अनेक योजनाएँ आरंभ की हुई हैं। यथा - शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, कौशलों का विकास, स्वरोज़गार आदि। सरकार उन महिलाओं को ऋण भी देती है जो अपनी स्वयं की आर्थिक योजनाएँ चलाना चाहती हैं। ये कार्यक्रम समग्र क्षेत्र की महिलाओं जैसे - शहरी/ग्रामीण, साक्षर/निरक्षर, उच्च शिक्षा प्राप्त, जनजाति-अनुसूचित जाति तथा पिछड़ा वर्ग की महिलाओं के लिए खुले हैं। अभिभावकों को चाहिए कि वे अपनी लड़कियों को इन योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करें।

vi) जो अभिभावक अपनी लड़कियों को अच्छी शिक्षा देना चाहते हैं उन्हें चाहिए कि वे उन्हें लड़कियों को उनकी रुचि के विषय, व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता दें, जिनकी वे पात्र हैं। उन्हें पारम्परिक प्रथाओं को चलाते नहीं रहना चाहिए।

vii) बच्चों के, पालन पोषण का दायित्व और अधिकार हमारे समाज में एकमात्र माँ का माना जाता है। परम्परागत संस्कारों में पली माताएँ यही संस्कार अपनी संतान को देती हैं। अतः, माताओं को चाहिए कि वे भी अपने दृष्टिकोण को बदलें। वे बालक-बालिका के भेदभाव को स्वयं त्यागें। तभी लड़की अपने को एक सक्षम व्यक्ति समझेगी।

12.9 सारांश

वृत्ति विकास व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण भाग है। अभी तक इसका अध्ययन पुरुष को केन्द्र बिन्दु बना कर किया गया है क्योंकि पुरुष परम्परागत रूप से कोई व्यवसाय अपनाते हैं तथा महिलाएँ घरेलू कामकाज करती हैं।

महिलाओं के वृत्ति प्रतिरूप पुरुषों से भिन्न होते हैं। महिलाओं के वृत्ति-विकास में अनेक प्रकार के बाधक कारक हैं। लड़कियों के वृत्ति विकास में अध्यापिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। इनके वृत्ति-विकास में अभिभावकों का उत्तरदायित्व भी बराबर का महत्व रखता है।

12.10 अभ्यास कार्य

1. लड़कियों के वृत्ति-विकास के मुख्य लक्षण क्या-क्या हैं?
2. लड़कियों में कार्य भूमिका का अवबोध किस प्रकार उत्पन्न होता है?
   — लिंगभेद के आधार पर कार्य भेद (sex assignment)
   — लड़का-लड़की होने का स्व-वर्गीकरण करना
   — लिंग-भूमिका प्राथमिकता के साथ जोड़कर (stringing for sex role preference)
   — लिंग भूमिका के साथ तादात्मय (identification with sex role)
3. लड़कियाँ शिक्षा प्राप्त क्यों नहीं कर पातीं?
4. अध्यापिका या अध्यापक लड़कियों का वृत्ति-विकास किस प्रकार कर सकते है?

12.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

इकाई 9

1. अभिवृद्धि, गवेषण, स्थापन, अनुरक्षण तथा ह्रास।
2. परिच्छेद 9.6 को पढ़ें।
3. परिच्छेद 9.6.1 तथा परिच्छेद 9.6.2 को पढ़ें
4. i) असत्य
   ii) सत्य
   iii) असत्य
   vi) सत्य
   v) असत्य
5. i) ग
   ii) क
   iii) घ
   iv) ख
6. i) यर्थाथवादी–वर्तमान की ओर अभिमुख, जिसका संबंध ठोस व साकार से हो, जिसमें यांत्रिक योग्यता हो, स्पष्टवादिता को पसंद करता हो।
   ii) उद्यमी – खतरनाक कार्य करना पसंद करता हो। वाकपटुता हो, आत्म-विश्वास रखता हो और निश्चयात्मक हो।

iii) सामाजिक – लोगों की अभिमुख हों, अर्थात लोगों की सहायता करें और अच्छे वक्ता हों।

7. 1. i) वास्तविकता घटक

ii) शिक्षा के स्तर व उसकी गुणवत्ता का प्रभाव

iii) व्यक्ति का व्यक्तित्व तथा संवेदनात्मक ढाँचा

iv) वैयक्तिक मूल्य

8. निश्चयीकरण प्रावस्था में विद्यार्थी अपने व्यवसाय के चयन के विषय में आश्वस्त हो जाता है। विशिष्टकरण अवस्था में वह सक्रिय अंतिम प्रतिबद्धता दर्शाता है। उदाहरणार्थ – उक्त व्यवसाय अपना लेता है।

9. कार्योन्मुख विद्यार्थी व्यावसायिक लक्ष्य के लिए संतुष्टि को विलंबित कर सकते है। सुखोन्मुख व्यक्ति इस प्रकार के लक्ष्य से शीघ्र ही भ्रमित हो जाते हैं।

इकाई 10

1. (क) आर्थिक

(ख) भौतिक व सामाजिक परिवेश

(ग) किए जाने वाले कार्यकलाप

(घ) व्यक्ति की आकांक्षाएँ

2 i) हाँ

ii) नहीं

3. i) क्योंकि लोगों की आकाक्षाएँ अलग-अलग होती है।

ii) आत्मसम्मान, तादात्मय, कौशलों तथा योग्यताओं की आत्मभिव्यक्ति तथा प्रतिबद्धता तथा स्वगुण

iii) लोग उस आत्मसम्मान के लिए जो उन्हें व्यवसाय में निहित कार्य से मिलता है, उसके लिए व्यवसाय अपनाते हैं। तथापि अलग-अलग व्यक्ति किसी कार्य से भिन्न-भिन्न रूप में प्रभावित होते है। यह उनके आत्म-प्रत्यय, अपेक्षाओं, आकांक्षाओं, परिवेश और अन्य कारकों पर निर्भर करता है।

iv) हाँ, अधिकांश रूप में इससे व्यक्ति को पहचान मिलती है। व्यक्ति का अस्तित्व, उसकी जीवन-शैली, वातावरण सभी उस कार्य से प्रभावित होते हैं जिसे व्यक्ति करता है। सामान्यतः शिक्षण संवृत्ति से संबंधित व्यक्ति मनोरंजन क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक परिपक्व व गंभीर समझे जाते हैं।

4. i) क्योंकि हम प्रकृति से ही सामाजिक होते है अतः हमें संबद्धता की आवश्यकता पड़ती है, हमें आवश्यकता होती है कि लोग हमारे कार्यों को सराहें तथा हमें पहचानें, या पुरस्कृत करें। यह आवश्यकताएँ हमारी सामाजिक आवश्यकताएँ कहलाती है।

ii) क्योंकि कामकाज की अवस्थिति व्यक्ति को एक सामाजिक समूह तथा एक सामाजिक वातावरण प्रदान करती है। कार्मिक स्वतः ही समाज का सदस्य बन जाता है।

iii) कुछ व्यक्ति ऐसे होते है जो दूसरों पर आधिपत्य रखने की इच्छा रखते है जबकि कुछ ऐसे होते है जो चाहते है कि दूसरें उन्हें निदेशित करते रहें। इस प्रकार उनकी

प्राथमिकताओं की सीमाओं के अंदर कर्मी कुछ हद तक स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं।

iv) यदि किन्हीं व्यक्तियों का व्यवसाय उन्हें उनके कर्त्तव्य निर्वाह में उचित स्वतंत्रता प्रदान नहीं करता तो वे असुविधा का अनुभव करते है और फलतः उनकी अपने कार्य में रुचि नहीं रहती है।

v) अपनी सेवाओं के काल, योत्यता और उत्कर्ष के बदले न्यायपूर्ण व्यवहार की अपेक्षा रखते हैं। यह न्यायपूर्ण व्यवहार का अर्थ है दुर्घटना के लिए क्षतिपूर्ति आकस्मिक अवकाश, आवास सुविधा कुछ विशेष भत्ते आदि देना।

vi) व्यवसाय की प्रतिष्ठा प्रदायक विशेषताएँ उस व्यवसाय से संबंधित होती हैं जिससे व्यक्ति संबद्ध है। कुद स्ववृत्तियाँ जैसे प्रबंधकीय और इस प्रकार के अन्य व्यवसायों के साथ उच्च प्रतिष्ठा जुड़ी होती है जबकि कुछ कुशल तथा अर्धकुशल व्यवसायों के साथ निम्न प्रतिष्ठा जुड़ी होती हैं।

vii) नहीं, अपने व्यवसाय में व्यक्ति की संतुष्टि तथा गरिमा उसके अपने विशेष परिवेश में अर्जित उसके अपनी आवश्यकताओं के प्रतिरूपों पर निर्भर करती है।

5. i) आर्थिक आवश्यकताएँ

ii) व्यावसायिक सुरक्षा

iii) क्योंकि वर्तमान आय स्तर के साथ जुड़ी संतुष्टि व्यक्ति की आकांक्षाओं के स्तर तथा उसकी अपनी आय और उस जैसी योग्यता रखने वाले अन्य व्यक्तियों की आय के मध्य समता से प्रभावित होती हैं।

iv) प्रतिष्ठा, शैक्षिक स्तर, आयु, अनुभव तथा कार्य (व्यवसाय) सुरक्षा से जुड़े अन्य पक्ष।

v) क्योंकि कुछ व्यवसाय कुछ विशेष ऋतुओं में उपलब्ध होते है अर्थात् उनका ऋतु आधारित भरती मूल्य होता है।

vi) वृद्धावस्था में वे कार्य या व्यवसाय अभिमान्य होते हैं जिनमें कम शारीरिक श्रम व कम दायित्व हो।

6. i) व्यवसाय व्यक्ति की जीवन-शैली को विभिन्न तरीकों में प्रभावित करता है, जैसे उच्च प्रतिष्ठा वाले व्यवसाय संबंधी दायित्व व कार्य मात्र दफ्तर में ही समाप्त नहीं होते हैं, जबकि निम्न प्रतिष्ठा वाले कार्यो (व्यवसायों) से निर्धारित कार्य-समय के अतिरिक्त व्यक्ति के सामाजिक व वैयक्तिक जीवन को प्रभावित नहीं करते बल्कि व्यवसाय की प्रकृति (प्रकार) समय को भी निर्धारित करती है। दफ्तरी कार्य की तुलना में व्यापार या स्वरोज़गार में अधिक समय लगाना पड़ता है।

ii) विभिन्न व्यवसायों की व्यावसायिक स्थिति (प्रतिष्ठा) विभिन्न रूपों में परिवर्तित होती हैं। प्रतिष्ठा, आय, अपेक्षित कौशल या प्रशिक्षण, शैक्षिक स्तर, अभिरुचि और योग्यता की दृष्टि से व्यवसायों को सोपानिक क्रम में वर्गीकृत किया जा सकता है। इस आधार पर किए गए एक वर्गीकरण के अनुसार व्यवसायों को निम्नलिखित वर्गों में विभक्त किया जा सकता हैः संवृत्तिक तथा प्रबंधकीय, लिपित तथा विक्रय, कौशलयुक्त तथा पर्यवेक्षणीय अर्धकुशल तथा अकुशल व्यवसाय।

iii) सभी व्यवसायों में नहीं। सभी संवृत्तियों व्यक्ति को एक जैसी प्रतिष्ठा तथा आय प्रदान नहीं करती जबकि कुशल तथा अकुशल व्यवसायों में ऐसा हो सकता है। विभिन्न व्यवसायों द्वारा प्रदत्त प्रतिष्ठा में भी भिन्नता पाई जाती है, यह सब सांस्कृतिक संदर्भ पर निर्भर करता है। संभव है कि किसी व्यवसाय के साथ जुड़ी प्रतिष्ठा तथा आय दूसरे व्यवसाय के साथ संगत न हो। इसके कारण यह संभव

नहीं हो पाता कि व्यक्ति को किसी व्यवसाय में आय तथा प्रतिष्ठा या शक्ति और प्रतिष्ठा दोनों ही मिल पाएँ।

iv) व्यवसाय से किसी व्यक्ति का समय संरचनीकरण भी निर्धारित होता है। कुछ ऐसे व्यवसाय होते हैं जो कुछ विशेष क्षेत्रों से संबंधित हो जैसे, कुछ व्यक्ति व्यापारी (मर्चेंट) क्षेत्र तथा कुछ खान (माइन) क्षेत्रों में कार्य करते हैं। रक्षा विभाग में कार्य करने वाले व्यक्ति भी अपना समय उन व्यक्तियों की संगत में बिताते हैं जो उस विशेष कार्य स्थल पर कार्यरत् है।

v) क्योंकि विभिन्न व्यवसायों में कार्यकलाप, प्रतिष्ठा, आय, समयक्रम, अवकाश समय तथा व्यक्तियों की दृष्टि से भिन्नता पाई जाती है अतः व्यवसाय से सामाजिक संबंध प्रभावित होते है। उदाहरणार्थ, एक अध्यापक अधिकांशतः अपने सहयोगियों तथा विद्यार्थियों से मिलते-जुलते रहते है अतः वे उनकी अभिवृत्तियों तथा मूल्यों को प्रभावित कर सकते है तथा साथ ही उनकी अभिवृत्तियों तथा मूल्यों से प्रभावित हो जाते है।

7. i) व्यवसाय से व्यक्ति की अभिवृत्तियाँ तथा मूल्य प्रभावित हो जाते है। जैसे उन व्यक्तियों की अभिवृत्तियाँ तथा मूल्य जो शांत व स्वच्छ कार्यस्थल पर कार्य करते है उन व्यक्तियों की अभिवृत्तियों और मूल्यों से सर्वथा भिन्न होते हैं जो शोर-गुल वाले, अव्यवस्थित तथा धूल व गर्द भरे स्थानों पर कार्य करते है।

ii) यदि व्यक्ति व्यवसाय के कार्य बल के अंग बन जाते हैं तो वहाँ का परिवेश उनकी रुचियों, अभिरुचियों, वरीयताओं, अभिवृत्तियों तथा मूल्यों को प्रभावित करता है। व्यवसाय का भौतिक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक वातावरण उनकी अभिवृत्तियों तथा मूल्यों को काफी हद तक तदनुसार ढ़ाल देता है। व्यवसाय द्वारा मूल्यों और अभिवृत्तियों में लाया गया परिवर्तन न केवल व्यवसाय-विशेष संबंधी व्यवहार अपितु समग्र व्यक्तित्व संबंधी विशेषताओं को प्रभावित करता है।

iii) हाँ, विभिन्न व्यवसाय अलग-अलग सामाजिक अवस्थितियाँ प्रस्तुत करते हैं। कार्य की सामाजिक अवस्थिति से भौतिक परिवेश में अत्यधिक बढ़ोतरी हो जाती है। सामाजिक अवस्थिति बताती है कि हमें किस प्रकार के व्यक्तियों के संपर्क में कार्य करना है।

इकाई 11

1. i) वृत्ति का संकेत उन सभी प्रकार के कार्यकलापों के ओर होता है जिनसे कोई व्यक्ति जीवन पर्यन्त जुड़ा रहेगा। जबकि व्यवसाय से अभिप्रायः है किसी एक प्रकार के काम-धंधे या वृत्ति का वरण

ii) संवृद्धि प्रावस्था, अन्वेषण प्रावस्था, स्थापन प्रावस्था, अनुरक्षण प्रावस्था तथा ह्रासोंमुख प्रावस्था।

iii) तैयारी का कार्यकाल, प्रारंभिक कार्यकाल, जाँच कार्यकाल, स्थिर कार्यकाल तथा सेवा-निवृत्ति कार्यकाल।

iv) स्थिर वृत्ति प्रतिरूप, परंपरागत वृत्ति प्रतिरूप, अस्थिर वृत्ति प्रतिरूप तथा बहुविध जाँच वृत्ति प्रतिरूप।

2. i) व्यक्तिगत, अभिभावकीय सामाजिक-आर्थिक स्तर, मानसिक योग्यता, कौशल, व्यक्तित्व संबंधी विशेषताएं, वृत्तिक परिवपक्वता तथा वे अवसर जिनके लिए व्यक्ति उद्भासित हुआ है। इसके अतिरिक्त आत्म-प्रत्यय तथा सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व है।

ii) व्यावसायिक सफलता व्यक्ति में स्वायत्तता की भावनाओं को जन्म देती है जिससे व्यक्ति कुछ सीमा तक अपने वर्तमान को नियंत्रित कर लेता है तथा भविष्य को भी। इससे व्यक्ति की रुचि उन चीजों में बढ़ जाती है। जिसमें उसे सफलता मिली।

iii), iv) और v) के लिए परिच्छेद 11.8 व 11.8.1 व 11.8.2 को पढ़ें।

इकाई 12

1. i) सही

   ii) गलत

   iii) सही

   iv) सही

   v) गलत

2. भाग 12.4 देखें।
3. भाग 12.5 देखें।
4. उपभाग 12.6.1 देखें।
5. उपभाग 12.6.2 देखें।
6. भाग 12.6 देखें इन कठिनाइयों को इकट्ठा कर लें।
7. भाग 12.8 देखें।
8. उपभाग 12.8.3 देखें।

12.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Anne Rae (1956): *The Psychology of Occupation,* John Wiley & Sons Inc., New York. Cleapman & Hall Limited, London.

Applying Contemporary Theories to Practice, Joney-Bass Publishers, San Francisco, Oxford, 1990.

Brown, D. & Brooks, L. (eds.) (1984, 1990): *Career Choice and Development*, Jossey-Bass, San Francisco.

Dhoundiyal, V.R., Doundiyal, N.C., and Shukla, A. (eds.) (1994) : *The Indian Girls,* Shri Almora Book Depot, Almora (U.P.).

Joneja, G.K. (1994) : *Career Information Needs of Girls*, pp. 146-169, In Dhoundiyal et. al.

Joneja, G.K. (1997) : *Occupational Information in Guidance*, NCERT, New Delhi.

John L. Holland (Professor Emerities John Hopkins University) : *Making Vocational Choicès: A Theory of Vocational Personalities and Work Environments*, Prentice Hall Inc., Englewood Cliffes, New Jersey.

Kulshrashta, Indira, (1962) : *Indian Women — Images and Replicas,* Blaza Publisher, New Delhi.

Pietrofessa, J. Biana Bernstein, J.A. Minor and Susan Stanford (1980) : *Guidance — An Introduction*, Rand McNally College Publishing Company; Chicago.

Rao, D.B. and Rao, K.R.S.S. (eds.) (1960) : *Current Trends in Indian Education*, Discovery Publishing House, New Delhi.

Samuel H. Osipoco (1983) : *Theories of Career Development*, The Ohio State University, Prenitce Hall Inc., Englewood Cliffs, New Jersey.

Super, D.E. (1957) : *The Psychology of Careers*, Harper, New York.

Super, D. (1993) : *Theory of Vocational Development*, American Psychologist (8), 1985-90.